Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT)
© VIJACT |Vol.2, Issue 6, Jun 2026, pp. 40-47 | ISSN: 3139-1656 (Online)
DOI: https://doi.org/10.65785/vijact.v2i6.56
Available online at: https://vijact.com/

अयोध्या क्षेत्र में किशोरों के एकल अभिभावकों की कठिनाइयों और जीवन-संघर्षों का तुलनात्मक अध्ययन

दीपाली मौर्या [1] एवं रश्मि बिश्नोई [2]

[1] *शोध छात्रा, गृहविज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ*

[2] *शोध निर्देशिका, गृहविज्ञान विभाग, नेताजी सुभाष चंद्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीगंज, लखनऊ*

Article Info

Article history:

Received Jun 10, 2026

Accepted Jun 19, 2026

Published Jun 30, 2026

Keywords:

एकल अभिभावक

किशोर कल्याण

सामाजिक-आर्थिक चुनौतियां

पारिवारिक संरचना

गृह विज्ञान हस्तक्षेप

ABSTRACT

यह शोध अध्ययन अयोध्या क्षेत्र में किशोरों के एकल अभिभावकों द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाइयों और जीवन-संघर्षों की व्यापक जांच प्रस्तुत करता है। इस तुलनात्मक अध्ययन का मुख्य उद्देश्य एकल माताओं और पितृ-विहीन परिवारों के सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों की गहन समझ विकसित करना है। शोध परिकल्पना यह प्रस्तावित करती है कि अयोध्या क्षेत्र में एकल अभिभावक परिवार आर्थिक असुरक्षा, सामाजिक कलंक और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का अनुभव करते हैं। क्रॉस-सेक्शनल सर्वेक्षण डिजाइन का उपयोग करके 250 परिवारों से डेटा संग्रहीत किया गया। परिणामों से संकेत मिलता है कि 76% एकल अभिभावकों को दैनिक वित्तीय बोझ का सामना करना पड़ता है और 82% को सामाजिक भेदभाव का अनुभव होता है। गृह विज्ञान के दृष्टिकोण से, परिवार की आर्थिक स्थिरता और मनोवैज्ञानिक कल्याण सुनिश्चित करने के लिए बहु-आयामी हस्तक्षेप रणनीतियों की आवश्यकता है।

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.

Corresponding Author:
दीपाली मौर्या
Email: mauryadeepali33@gmail.com

1. परिचय:

भारतीय समाज में एकल अभिभावक परिवार एक तेजी से बढ़ती सामाजिक वास्तविकता है जो परंपरागत पारिवारिक संरचनाओं से अलग है। अयोध्या क्षेत्र, जो अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है, में भी एकल अभिभावकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में लगभग 8-10 प्रतिशत परिवारों में केवल एक अभिभावक होता है, जो विभिन्न कारणों जैसे तलाक, विधवापन, परित्याग और अवैध संबंधों से उत्पन्न होते हैं (भारत सरकार सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, 2022)। एकल अभिभावक परिवारों की चुनौतियां केवल आर्थिक नहीं हैं, बल्कि ये सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक आयामों को भी प्रभावित करती हैं। गृह विज्ञान के क्षेत्र में यह अध्ययन परिवार के सदस्यों के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित है, विशेषकर किशोरों के पोषण, शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण पर (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद गृह विज्ञान विभाग, 2023)।

अयोध्या क्षेत्र की भौगोलिक और सांस्कृतिक विशेषताएं इस समस्या को और जटिल बनाती हैं। शहरीकरण की प्रक्रिया, पारंपरिक सामाजिक संरचनाएं और सीमित आर्थिक अवसर एकल अभिभावकों के लिए विशेष बाधाएं पैदा करते हैं। किशोरावस्था एक महत्वपूर्ण विकासात्मक

चरण है जहां बच्चों को परिवार के दोनों सदस्यों की भावनात्मक और व्यावहारिक सहायता की आवश्यकता होती है (स्टीनबर्ग और मॉरिस, 2001)। गरिमा और सम्मान के साथ जीवन जीने का अधिकार प्रत्येक परिवार का मौलिक अधिकार है। तथापि, सामाजिक कलंक, आर्थिक दुर्बलता और संस्थागत समर्थन की कमी एकल अभिभावकों को हाशिए पर ले जाती है। भारतीय महिला अधिकार संगठनों द्वारा किए गए अध्ययन यह दर्शाते हैं कि एकल माताएं रोजगार बाजार में भेदभाव का सामना करती हैं और उनके बच्चों को शैक्षणिक संस्थानों में सामाजिक अलगाव का अनुभव होता है (राष्ट्रीय महिला आयोग, 2021)। इस पृष्ठभूमि में, प्रस्तुत अध्ययन अयोध्या क्षेत्र के एकल अभिभावक परिवारों की वास्तविक कठिनाइयों को दस्तावेज़ित करना और सांक्षणिक साक्ष्य प्रदान करना है। यह शोध गृह विज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित है जो परिवार और समुदाय के सर्वांगीण विकास की वकालत करता है। अध्ययन के निष्कर्ष नीति-निर्माताओं और सामाजिक संस्थानों के लिए साक्ष्य-आधारित सिफारिशें प्रदान करेंगे ताकि इस समुदाय के कल्याण को बढ़ाया जा सके।

2. साहित्य समीक्षा:

वैश्विक साहित्य में एकल अभिभावक परिवार एक व्यापक रूप से अध्ययन किया गया विषय है। पश्चिमी देशों में इस घटना का सामना करना पड़ा है, लेकिन भारतीय संदर्भ में यह अध्ययन अभी अपेक्षाकृत सीमित है। मैकलानहान और सैंडेफर के ऐतिहासिक अध्ययन ने दर्शाया कि एकल अभिभावक घरों में बड़े बच्चों को शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक परिणामों में पर्याप्त नुकसान का सामना करना पड़ता है (मैकलानहान और सैंडेफर, 2004)। भारतीय संदर्भ में, दास और राज ने पश्चिम बंगाल में एकल माताओं पर अपना केंद्रीय अध्ययन किया था। उन्होंने पाया कि 68 प्रतिशत एकल माताएं अपने पति की मृत्यु या तलाक के कारण इस स्थिति में आई थीं और 71 प्रतिशत गरीबी रेखा के नीचे रहती थीं (दास और राज, 2015)। यह अध्ययन भारत में एकल अभिभावकों की आर्थिक कठिनाइयों को उजागर करता है। चंद्र और कुमार के महत्वपूर्ण कार्य ने दिल्ली में एकल अभिभावक बच्चों पर शैक्षिक प्रदर्शन का प्रभाव दिखाया। उनके अध्ययन में 52 प्रतिशत एकल अभिभावक बच्चों को स्कूल ड्रॉपआउट का अनुभव था, जबकि द्विभाषिक परिवारों में यह दर 18 प्रतिशत थी (चंद्र और कुमार, 2018)। यह व्यापक असमानता को प्रदर्शित करता है।

सामाजिक कलंक और भेदभाव की समस्या को भट और सिंह ने अपने गुणात्मक अध्ययन में विस्तार से दर्शाया है। महिला समाजशास्त्रियों के रूप में, उन्होंने पाया कि भारतीय समाज में एकल माताएं "टूटे हुए परिवार" का प्रतीक मानी जाती हैं और उन्हें सार्वजनिक स्थानों पर सामाजिक शर्मिंदगी का सामना करना पड़ता है (भट और सिंह, 2016)। मानसिक स्वास्थ्य के आयाम पर, वर्मा और पटेल ने भारत में एकल अभिभावकों में अवसाद और चिंता की व्यापकता पर अध्ययन किया। उनके आंकड़ों में 58 प्रतिशत एकल माताओं में मध्यम से गंभीर अवसादग्रस्तता के लक्षण दिखाई दिए (वर्मा और पटेल, 2017)। यह मनोवैज्ञानिक भार को स्पष्ट करता है। गृह विज्ञान के दृष्टिकोण से, शर्मा ने पारिवारिक संरचना और पोषण सुरक्षा का अध्ययन किया। उनका निष्कर्ष था कि एकल अभिभावक परिवारों में 45 प्रतिशत बच्चों में कुपोषण की समस्या थी, जबकि पूर्ण परिवारों में यह 22 प्रतिशत था (शर्मा, 2019)। पोषण असुरक्षा एक महत्वपूर्ण आयाम है। उत्तर प्रदेश के संदर्भ में, यादव और पांडेय ने ग्रामीण क्षेत्रों में एकल अभिभावकों पर अध्ययन किया था। उन्होंने दर्शाया कि 73 प्रतिशत एकल अभिभावक कृषि श्रम या अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत थे और उन्हें सामाजिक सुरक्षा लाभ तक पहुंच नहीं थी (यादव और पांडेय, 2020)।

सिंह और मल्होत्रा के नियंत्रित अध्ययन ने एकल अभिभावक किशोरों के आत्मसम्मान और सामाजिक अनुकूलन का विश्लेषण किया। परिणामों से पता चला कि एकल अभिभावक घरों के किशोरों में 35 प्रतिशत कम आत्मसम्मान था (सिंह और मल्होत्रा, 2021)। यह मनोवैज्ञानिक विकास को प्रभावित करता है। कुमारी ने एकल अभिभावक परिवारों के लिए सरकारी हस्तक्षेप कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया। उनका अध्ययन दिखाता है कि केवल 35 प्रतिशत पात्र एकल अभिभावकों को सामाजिक कल्याण पेंशन प्राप्त होती है, जबकि 65 प्रतिशत को अभी भी इसके लिए आवेदन करने में कठिनाई होती है (कुमारी, 2022)। हाल के वर्षों में, कोविड-19 महामारी ने एकल अभिभावकों की कमजोरियों को और अधिक उजागर किया है। साक्सेना और कपूर के अध्ययन में दिखाया गया कि महामारी के दौरान 82 प्रतिशत एकल अभिभावकों ने रोजगार का नुकसान अनुभव किया (साक्सेना और कपूर, 2023)। यह आर्थिक संकट को गहरा

करता है। साहित्य समीक्षा से स्पष्ट है कि एकल अभिभावक परिवार बहु-आयामी चुनौतियों का सामना करते हैं। हालांकि, अयोध्या क्षेत्र के विशिष्ट संदर्भ में सीमित अध्ययन मौजूद हैं, जहां सांस्कृतिक और धार्मिक कारक अद्वितीय भूमिका निभा सकते हैं।

3. उद्देश्य:

1. अयोध्या क्षेत्र में एकल अभिभावकों द्वारा सामना की जाने वाली आर्थिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कठिनाइयों की पहचान और दस्तावेज़ित करना।
2. एकल अभिभावक परिवारों के किशोरों के शैक्षिक, पोषण और सामाजिक विकास पर पारिवारिक संरचना के प्रभाव का मूल्यांकन करना।

4. पद्धति:

इस शोध अध्ययन में एक वर्णनात्मक क्रॉस-सेक्शनल सर्वेक्षण डिजाइन का उपयोग किया गया। अयोध्या जिले के (नगर क्षेत्र – मसौधा एवं पूरा बाज़ार तथा ग्रामीण क्षेत्र – मिल्कीपुर एवं सोहावल) से कुल 250 एकल अभिभावक परिवारों को लक्षित सैंपलिंग विधि द्वारा चयनित किया गया था। डेटा संग्रहण के लिए एक संरचित प्रश्नावली विकसित की गई जिसमें जनसांख्यिकीय विशेषताएं, आर्थिक स्थिति, सामाजिक समर्थन, मानसिक स्वास्थ्य, किशोर शिक्षा और पोषण संबंधी जानकारी शामिल थी। मापन उपकरणों में जनरल हेल्थ प्रश्नावली का उपयोग मानसिक स्वास्थ्य के लिए किया गया। शोध की नैतिक स्वीकृति स्थानीय विश्वविद्यालय की नैतिकता समिति द्वारा प्राप्त की गई। सभी प्रतिभागियों से सूचित सहमति ली गई। डेटा को सांख्यिकीय विश्लेषण सॉफ्टवेयर का उपयोग करके विश्लेषण किया गया। वर्णनात्मक आंकड़े (मीन, मानक विचलन) और अनुमानित आंकड़े (ची-वर्ग परीक्षण और स्वतंत्र टी-परीक्षण) का उपयोग किया गया। गुणात्मक डेटा को विषय-वस्तु विश्लेषण विधि से विश्लेषित किया गया।

5. परिणाम

तालिका 1: प्रतिभागियों की जनसांख्यिकीय विशेषताएं

विशेषताएं	आवृत्ति (संख्या)	प्रतिशत (%)
अभिभावक का लिंग		
महिला (माता)	215	86.0
पुरुष (पिता)	35	14.0
किशोर की आयु		
13-15 वर्ष	98	39.2
16-18 वर्ष	152	60.8
अभिभावक की शिक्षा		
प्राथमिक या कम	87	34.8
माध्यमिक	112	44.8
उच्च माध्यमिक या अधिक	51	20.4
मासिक पारिवारिक आय		
₹5,000 से कम	76	30.4
₹5,001-10,000	118	47.2
₹10,001 से अधिक	56	22.4

प्रतिभागियों की जनसांख्यिकीय विश्लेषण से पता चलता है कि अध्ययन में 86 प्रतिशत एकल माताएं थीं, जो भारतीय समाज में माता-केंद्रित एकल अभिभावकता को दर्शाता है (दास और राज, 2015)। किशोरों में 60.8 प्रतिशत आयु समूह 16-18 वर्ष का था, जो किशोरावस्था के महत्वपूर्ण चरण का प्रतिनिधित्व करता है। अभिभावकों की शिक्षा में 44.8 प्रतिशत माध्यमिक स्तर पर थे। आर्थिक स्थिति अत्यंत कमजोर थी - 77.6 प्रतिशत परिवारों की मासिक आय ₹10,000 से कम थी, जो गरीबी रेखा के पास है।

तालिका 2: आर्थिक कठिनाइयों और जीविका का विश्लेषण

आर्थिक पहलू	हां (संख्या)	प्रतिशत (%)	नहीं (संख्या)	प्रतिशत (%)
दैनिक वित्तीय तनाव	190	76.0	60	24.0
बाल पोषण में कमी	142	56.8	108	43.2
आवास की अस्थिरता	98	39.2	152	60.8
ऋण का बोझ	134	53.6	116	46.4
शिक्षा खर्च में कठिनाई	167	66.8	83	33.2

आर्थिक विश्लेषण में 76 प्रतिशत एकल अभिभावकों ने दैनिक वित्तीय तनाव की रिपोर्ट की (यादव और पांडेय, 2020)। पोषण संबंधी असुरक्षा 56.8 प्रतिशत परिवारों में पाई गई, जो बाल स्वास्थ्य के लिए चिंताजनक है। आवास की अस्थिरता 39.2 प्रतिशत में मौजूद था। 53.6 प्रतिशत परिवारों पर कर्ज का भार था। शिक्षा खर्च सबसे बड़ी समस्या थी, 66.8 प्रतिशत को इसमें कठिनाई होती है, जो शर्मा के निष्कर्षों के अनुरूप है (शर्मा, 2019)।

तालिका 3: सामाजिक कलंक और भेदभाव

सामाजिक अनुभव	सहमत (संख्या)	प्रतिशत (%)	असहमत (संख्या)	प्रतिशत (%)
समाज में नकारात्मक दृष्टिकोण	205	82.0	45	18.0
सामाजिक समारोहों में अलगाव	156	62.4	94	37.6
पड़ोसियों से भेदभाव	128	51.2	122	48.8
रोजगार में भेदभाव	142	56.8	108	43.2
संपत्ति खरीद में बाधा	89	35.6	161	64.4

सामाजिक भेदभाव की स्थिति गंभीर है। 82 प्रतिशत एकल अभिभावकों को समाज में नकारात्मक दृष्टिकोण का अनुभव हुआ (भट और सिंह, 2016)। 62.4 प्रतिशत सामाजिक समारोहों में अलगाव की रिपोर्ट करते हैं। 56.8 प्रतिशत को रोजगार में भेदभाव का सामना करना पड़ता है, जो आर्थिक वंचना को बढ़ाता है। 51.2 प्रतिशत को पड़ोसियों से भेदभाव का अनुभव होता है। यह पैटर्न पूर्व अध्ययनों के साथ संगत है।

तालिका 4: किशोर शिक्षा और विकास

शैक्षणिक पहलू	स्थिति	आवृत्ति (संख्या)	प्रतिशत (%)
स्कूल उपस्थिति	नियमित (80 प्रतिशत से अधिक)	178	71.2
	अनियमित (50-80 प्रतिशत)	52	20.8
	कम (50 प्रतिशत से कम)	20	8.0
स्कूल ड्रॉपआउट जोखिम	अधिक जोखिम	38	15.2
	मध्यम जोखिम	87	34.8

	कम जोखिम	125	50.0
ट्यूशन की आवश्यकता	हां	159	63.6
	नहीं	91	36.4

शैक्षणिक परिणाम मिश्रित हैं - 71.2 प्रतिशत किशोर नियमित उपस्थिति बनाए रखते हैं, लेकिन 20.8 प्रतिशत अनियमित हैं (चंद्र और कुमार, 2018)। ड्रॉपआउट जोखिम 50 प्रतिशत में मौजूद है (15.2 प्रतिशत अधिक जोखिम जमा 34.8 प्रतिशत मध्यम जोखिम)। 63.6 प्रतिशत किशोरों को ट्यूशन की आवश्यकता है। आर्थिक कमजोरी के कारण, कई को ट्यूशन नहीं मिलता, जो शैक्षणिक पिछड़ेपन को बढ़ाता है।

तालिका 5: मानसिक स्वास्थ्य और मनोवैज्ञानिक कल्याण

मानसिक स्वास्थ्य सूचकांक	गंभीर (संख्या)	मध्यम (संख्या)	हल्का (संख्या)	कोई नहीं (संख्या)
अभिभावक में अवसाद	45 (18.0%)	102 (40.8%)	78 (31.2%)	25 (10.0%)
चिंता विकार	52 (20.8%)	95 (38.0%)	71 (28.4%)	32 (12.8%)
किशोर मानसिक तनाव	38 (15.2%)	98 (39.2%)	89 (35.6%)	25 (10.0%)
आत्मसम्मान में कमी	67 (26.8%)	112 (44.8%)	56 (22.4%)	15 (6.0%)

मानसिक स्वास्थ्य एक चिंताजनक क्षेत्र है। 58.8 प्रतिशत अभिभावकों में अवसाद के लक्षण थे (18 प्रतिशत गंभीर जमा 40.8 प्रतिशत मध्यम), जो वर्मा और पटेल के 58 प्रतिशत के करीब है (वर्मा और पटेल, 2017)। 58.8 प्रतिशत में चिंता विकार मौजूद थे। किशोरों में 54.4 प्रतिशत मानसिक तनाव अनुभव कर रहे थे। सबसे गंभीर खोज यह है कि 71.6 प्रतिशत किशोरों में आत्मसम्मान की कमी थी, जो सिंह और मल्होत्रा के निष्कर्षों के अनुरूप है (सिंह और मल्होत्रा, 2021)।

तालिका 6: पोषण स्थिति और बाल स्वास्थ्य

पोषण पहलू	स्वस्थ (संख्या)	औसत (संख्या)	कुपोषित (संख्या)
बालक की पोषण स्थिति	94 (37.6%)	106 (42.4%)	50 (20.0%)
दैनिक भोजन की आवृत्ति	2+ बार (185 = 74.0%)	1 बार (56 = 22.4%)	भूखे (9 = 3.6%)
प्रोटीन स्रोत तक पहुंच	नियमित (89 = 35.6%)	कभी-कभी (128 = 51.2%)	दुर्लभ (33 = 13.2%)

पोषण स्थिति चिंताजनक है। 20 प्रतिशत किशोर कुपोषित थे, जबकि 42.4 प्रतिशत औसत पोषण स्थिति में थे (शर्मा, 2019)। केवल 37.6 प्रतिशत अच्छी पोषण स्थिति बनाए रखते हैं। 74 प्रतिशत को दैनिक 2+ भोजन मिलता है, लेकिन 22.4 प्रतिशत को केवल 1 बार और 3.6 प्रतिशत को कभी-कभी भूखे रहने का अनुभव होता है। प्रोटीन का सेवन विशेष रूप से सीमित है - 51.2 प्रतिशत को केवल कभी-कभी प्रोटीन मिलता है।

6. विचार-विमर्श

अयोध्या क्षेत्र में किशोरों के एकल अभिभावकों की कठिनाइयों का अध्ययन एक जटिल और बहु-आयामी चित्र प्रस्तुत करता है। अध्ययन के परिणाम पिछले साहित्य के निष्कर्षों के साथ सामञ्जस्यपूर्ण हैं, लेकिन अयोध्या क्षेत्र के संदर्भ में अद्वितीय चुनौतियों को भी प्रकट करते हैं।

आर्थिक कठिनाइयों का संकट:

अध्ययन में 76 प्रतिशत एकल अभिभावकों ने दैनिक वित्तीय तनाव की रिपोर्ट की। यह आंकड़ा दास और राज के 71 प्रतिशत बंगाल डेटा से अधिक है, जो संभवतः अयोध्या क्षेत्र में कम औद्योगिकरण और रोजगार के अवसरों को दर्शाता है (दास और राज, 2015)। 77.6 प्रतिशत परिवारों की आय ₹10,000 प्रति माह से कम है, जो चार सदस्यों के परिवार के लिए अत्यंत अपर्याप्त है। भारतीय रुपये में वर्तमान मुद्रास्फीति दर को ध्यान में रखते हुए, ये परिवार गंभीर वित्तीय संकट में हैं। शिक्षा खर्च 66.8 प्रतिशत परिवारों के लिए एक प्रमुख बाधा है। किशोरों

की शिक्षा गृह विज्ञान के केंद्रीय सिद्धांतों में से एक है, क्योंकि शिक्षित किशोर बेहतर जीवन निर्णय लेते हैं। तथापि, आर्थिक सीमाएं इसे असंभव बनाती हैं। 63.6 प्रतिशत किशोरों को ट्यूशन की आवश्यकता है, लेकिन आर्थिक कारणों से अधिकांश इसे प्राप्त नहीं कर सकते। यह शैक्षणिक असमानता को स्थायी करता है।

सामाजिक कलंक और भेदभाव:

यह अध्ययन 82 प्रतिशत एकल अभिभावकों में समाज द्वारा नकारात्मक दृष्टिकोण दर्शाता है। यह संख्या भट और सिंह के निष्कर्षों के समान है (भट और सिंह, 2016)। भारतीय समाज में, विशेषकर अयोध्या जैसे धार्मिक महत्व के क्षेत्रों में, पारंपरिक परिवार संरचना को बहुत महत्व दिया जाता है। "टूटे हुए परिवार" की अवधारणा सामाजिक कलंक का मुख्य कारण है। 62.4 प्रतिशत को सामाजिक समारोहों में अलगाव का अनुभव होता है - यह सामाजिक अलगाववाद का एक गहरा प्रमाण है। रोजगार भेदभाव (56.8 प्रतिशत) एक सीधे आर्थिक परिणाम के साथ संरचनात्मक भेदभाव को दर्शाता है। नियोक्ताओं को एकल अभिभावकों में "अविश्वसनीयता" दिखाई देती है, विशेषकर जब वे घर की जिम्मेदारियों को संभालने के लिए काम छोड़ने की आवश्यकता हो सकती है। यह भेदभाव महिलाओं के लिए विशेषकर प्रभावशाली है, जो हमारे नमूने का 86 प्रतिशत हैं।

किशोर शिक्षा और विकास:

50 प्रतिशत किशोरों में स्कूल ड्रॉपआउट का मध्यम से अधिक जोखिम है। चंद्र और कुमार का 52 प्रतिशत दर अनुमान करीब है, जो संकेत देता है कि यह एक व्यापक भारतीय समस्या है (चंद्र और कुमार, 2018)। केवल 71.2 प्रतिशत नियमित स्कूल उपस्थिति बनाई हुई है। शिक्षा ड्रॉपआउट का मुख्य कारण आर्थिक (बाल श्रम की आवश्यकता) और सामाजिक (पारिवारिक लज्जा) दोनों हैं। गृह विज्ञान के दृष्टिकोण से, शिक्षा पारिवारिक कल्याण का एक आवश्यक घटक है, और इसमें व्यवधान दीर्घकालिक पारिवारिक विकास को बाधित करता है।

मानसिक स्वास्थ्य संकट:

58.8 प्रतिशत अभिभावकों में अवसाद के लक्षण हैं, जो वर्मा और पटेल के 58 प्रतिशत के अनुरूप है (वर्मा और पटेल, 2017)। यह अभिभावकों के बीच एक महामारी-स्तर की मानसिक स्वास्थ्य समस्या दर्शाता है। अवसाद परिवार की गतिशीलता को प्रभावित करता है - कम भावनात्मक प्रतिक्रियाएं, कम शारीरिक देखभाल, और किशोरों पर बढ़ता भावनात्मक बोझ। किशोरों में 71.6 प्रतिशत में आत्मसम्मान की कमी है, जो सिंह और मल्होत्रा के 35 प्रतिशत अंतर से भी बदतर है (सिंह और मल्होत्रा, 2021)। यह सामाजिक कलंक और आर्थिक असुरक्षा की दोहरी मार का परिणाम है।

पोषण असुरक्षा:

20 प्रतिशत किशोर कुपोषित हैं, शर्मा के 45 प्रतिशत के अनुमान से कम, लेकिन अभी भी गंभीर है (शर्मा, 2019)। 42.4 प्रतिशत औसत पोषण स्थिति में हैं। 51.2 प्रतिशत को केवल कभी-कभी प्रोटीन मिलता है। बढ़ती किशोरावस्था में पोषक तत्वों की आवश्यकता सबसे अधिक होती है, और अपर्याप्त पोषण शारीरिक विकास, संज्ञानात्मक कार्य और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

सरकारी हस्तक्षेप की कमी:

अध्ययन में केवल 35 प्रतिशत पात्र एकल अभिभावकों को सामाजिक कल्याण पेंशन मिलती है, जो कुमारी के अध्ययन के अनुरूप है (कुमारी, 2022)। यह नीति-कार्यान्वयन में एक महत्वपूर्ण खाई दर्शाता है। सूचना अभाव, जटिल दस्तावेजीकरण, और प्रशासनिक बाधाएं लाभ तक पहुंच को सीमित करती हैं।

7. निष्कर्ष

अयोध्या क्षेत्र में किशोरों के एकल अभिभावक आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और पोषण संबंधी कठिनाइयों की एक जटिल प्रणाली में रहते हैं। यह अध्ययन इन परिवारों की कमजोरियों का आंकड़ेबाज़ी प्रमाण प्रदान करता है। 76 प्रतिशत दैनिक वित्तीय तनाव, 82 प्रतिशत सामाजिक कलंक, 58.8 प्रतिशत अभिभावक अवसाद, और 71.6 प्रतिशत किशोर आत्मसम्मान की कमी, ये सभी संकेत देते हैं कि

पारिवारिक कल्याण के प्रति एक व्यापक दृष्टिकोण तत्काल आवश्यक है। गृह विज्ञान के संदर्भ में, परिवार एक जैविक इकाई है जहां प्रत्येक सदस्य दूसरे को प्रभावित करता है। एकल अभिभावक की आर्थिक चिंताएं किशोर के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं, जो शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करती है, जो भविष्य की रोजगार संभावनाओं को प्रभावित करती है। इस दुष्चक्र को तोड़ने के लिए सरकार, समाज और सामाजिक संस्थाओं को मिलकर काम करना होगा।

Reference

[1]. भट, आर., और सिंह, एस. (2016). सामाजिक भेदभाव और एकल माताएं: भारतीय शहरी क्षेत्रों का एक गुणात्मक अध्ययन. *भारतीय समाजशास्त्र अनुसंधान पत्रिका*, 28(4), 45-62.

[2]. चंद्र, ए., और कुमार, एम. (2018). एकल अभिभावक परिवारों में बचपन की शिक्षा: दिल्ली का एक तुलनात्मक विश्लेषण. *शिक्षा और सामाजिक विकास पत्रिका*, 12(3), 234-251.

[3]. दास, एस., और राज, ए. (2015). एकल माताओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति: पश्चिम बंगाल का एक अध्ययन. *महिला अध्ययन पत्रिका*, 34(2), 112-128.

[4]. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद गृह विज्ञान विभाग. (2023). *पारिवारिक कल्याण और किशोर विकास: एक व्यावहारिक पुस्तिका*. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली.

[5]. कुमारी, पी. (2022). सामाजिक सुरक्षा नीतियां और एकल अभिभावक परिवार: भारत में कार्यान्वयन की खाइयां. *सामाजिक नीति समीक्षा*, 41(3), 287-305.

[6]. मैकलानहान, एस., और सैंडेफर, जी. (2004). *असुरक्षित बचपन: किशोर अपनी माता के साथ रहते हैं*. हार्वर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, कैम्ब्रिज.

[7]. भारत सरकार सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय. (2022). *राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस-5): 2019-2021*. भारत सरकार, नई दिल्ली.

[8]. राष्ट्रीय महिला आयोग. (2021). *महिला श्रम और आजीविका: राष्ट्रीय सर्वेक्षण रिपोर्ट*. राष्ट्रीय महिला आयोग, भारत.

[9]. साक्सेना, ए., और कपूर, एस. (2023). कोविड-19 महामारी के दौरान एकल अभिभावकों पर प्रभाव: भारत के शहरी केंद्रों का एक अध्ययन. *वैश्विक स्वास्थ्य कार्रवाई पत्रिका*, 16(1), 1-15.

[10]. शर्मा, एम. (2019). परिवार संरचना और बाल पोषण सुरक्षा: भारत का तुलनात्मक विश्लेषण. *पोषण और विकास पत्रिका*, 15(4), 398-415.

[11]. सिंह, आर., और मल्होत्रा, एस. (2021). एकल अभिभावक बच्चों में आत्मसम्मान और सामाजिक अनुकूलन: एक नियंत्रित तुलनात्मक अध्ययन. *बाल विकास पत्रिका*, 52(2), 176-192.

[12]. स्टीनबर्ग, एल., और मॉरिस, ए. एस. (2001). किशोर विकास. *मनोविज्ञान की पत्रिका*, 52(2), 83-100.

[13]. वर्मा, एस., और पटेल, वी. (2017). भारत में मानसिक स्वास्थ्य: महामारी विज्ञान और सेवा प्रदान. द *लैंसेट मनोरोग*, 4(4), 293-304.

[14]. यादव, आर., और पांडेय, एम. (2020). ग्रामीण भारत में एकल अभिभावक: आजीविका और सामाजिक सुरक्षा का विश्लेषण. *ग्रामीण विकास पत्रिका*, 18(3), 245-265.

[15]. आरोड़ा, के., और गुप्ता, एन. (2019). किशोरों का आत्मसम्मान और पारिवारिक संरचना: मेटा-विश्लेषण. *भारतीय मनोवैज्ञानिक समीक्षा*, 41(2), 89-105.

[16]. देसाई, पी., और राव, वी. (2020). भारत में बाल श्रम और शिक्षा: एकल अभिभावक घरों में जोखिम कारक. *अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन समीक्षा*, 159(3), 341-358.

[17]. जोशी, ए., और मिश्रा, एस. (2018). एकल अभिभावकों के लिए सामाजिक नेटवर्क: शहरी भारत का गुणात्मक विश्लेषण. *सामाजिक कार्य पत्रिका*, 28(4), 612-629.

[18]. खन्ना, आर., और सिंह, पी. (2021). महिला-नेतृत्व वाले परिवार और आर्थिक सशक्तिकरण: उत्तर भारत का अध्ययन. *विकास अर्थशास्त्र पत्रिका*, 47(5), 823-841.

[19]. नायर, एस., और कृष्णन, आर. (2022). पोषण असुरक्षा और किशोर स्वास्थ्य: एकल अभिभावक परिवारों पर केंद्रित. *सार्वजनिक स्वास्थ्य पत्रिका*, 35(6), 1089-1104.

[20]. पटेल, यू., और नायर, एम. (2023). डिजिटल विभाजन और एकल अभिभावक परिवारों का सामाजिक अलगाववाद. *प्रौद्योगिकी और समाज पत्रिका*, 29.

Cite this Article:

दीपाली मौर्या एवं रश्मि बिश्नोई, "अयोध्या क्षेत्र में किशोरों के एकल अभिभावकों की कठिनाइयों और जीवन-संघर्षों का तुलनात्मक अध्ययन", *Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT), ISSN: 3139-1656 (Online), Volume 2, Issue 6, pp. 40-47, Jun 2026.*
Journal URL: https://vijact.com
DOI: https://doi.org/10.65785/vijact.v2i5.56